केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अं	प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15			प्राप्तांक शब्दों में		कुल प्राप्तांक अंकों में
16					

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परी रेत मुद्रा
S.C. SHRIVAS LECTURER V. No. 4502	Dr V.No.11610

(2)

6 = 6

पृष्ठ 2 के अंक   कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

B
S
E

प्रश्न क्रमांक – (1) का उत्तर –

(1) मरा

(2) भी

(3) 155

(4) दो

(5) अर्थालंकार।

(6) भगत जी।

③

6 + 6 = 12

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक - (3) का उत्तर -

(i) असत्य,

(ii) सत्य,

(iii) सत्य,

(iv) सत्य,

(v) सत्य,

(vi) असत्य,

BSE

योग पूर्व पृष्ठ

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक - (2) का उत्तर =>

(i) पाठशाला ।

(ii) रीडिफ डाटकाम ।

(iii) भार ।

(iv) व्यतिरेक ।

(v) जैनेन्द्र कुमार ।

(vi) तीन ।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक - (5) का उत्तर-

(i) सिल्वर वैडिंग

(ii) डायरी।

(iii) हालावाद।

(iv) 1936।

(v) खण्डकाव्य

(vi) कहानी। 2

(vii) तत्सम।

7

24 + 6 = 30

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक - (5) का उत्तर -

(i) 15 - 30 मिनट ।

(ii) अलोक धनवा ।

(iii) निर्वेद ।

(iv) दुनिया रोज बनती है ।

(v) दो ।

(vi) परेशानी आने से बचना ।

(vii) मुअनजो - दौड़ ।

BSE

30 + 3 = 33

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक - (6) का उत्तर -

(i) राम के [illegible] आ जाना।

(ii) ललिता बाजार से फूलों की माला लाई।

प्र० क्रमांक - (11) का उत्तर -

महाकाव्य के रचनाकारों के नाम	महाकाव्य ~~रचनाकारों~~ के नाम
(1) तुलसीदास।	(1) रामचरितमानस
(2) ~~कमायनी~~ जयशंकर प्रसाद।	(2) कमायनी

B
S
E

ARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARY ... YAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYED

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक - (12) का उत्तर - (अथवा)

वीर रस की परिभाषा :-

भावुक के हृदय में "उत्साह" नामक स्थायीभाव जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के साथ संयोग करके "वीर रस का रूप ग्रहण कर लेता है। वह वीर रस होता है।

उदाहरण :- "बुन्देलों हर बोलो के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

B
S
E

9

35 + 2 = 37

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक -(14) का उत्तर- (अथवा)

आत्मकथा	जीवनी
① आत्मकथा स्वंय के द्वारा लिखी जाती है।	① जीवनी किसी दूसरे के द्वारा लिखी जाती है।
② आत्मकथा में स्वंय के गुण-दोषों को लिखा जाता है।	② जीवनी किसी दूसरे या किसी महापुरुष के गुण-दोषों को लिखा जाता है।

2

BSE

योग पूर्व पृष्ठ 37 पृष्ठ 10 के अंक 3 कुल अंक 40
माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक -(23) का उत्तर-(अथवा)

शुभ स्थान - मानपुर
दिनांक - 06-02-2024

प्रिय मित्र,
अंजली।
सप्रेम नमस्ते।

मैं अति हर्ष के साथ लिख रही हूं की मेरी बड़ा भाई अजबशाह की शादी है। 15 अप्रैल को उसकी मंडप है। इसमें आप सभी परिवार को मेरे भाई को आशिर्वाद देने के लिए आना होगा आप सभी को मेरे और मेरे परिवार की ओर से आप को निमन्त्रण भेज रही हूं।
मैं प्रत्याशा मे रहूंगी। तुम अवश्य आना।

तुम्हारी प्रिय
सहेली नन्दनी

BSE

40 — 40

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक -(22) का उत्तर-

=ॐ= प्रदूषण का बढ़ता प्रभाव =ॐ=

(1) रूपरेखा :- (1) प्रदूषण का फैलाव (2) प्रस्तावना (3) प्रदूषण से बीमारि फैलना। (4) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना :- प्रदूषण एक वायु के द्वारा फैलती है। जिसमें बहुत से जीव - जन्तुओं के स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। इसी कारण अनेक प्रकार के बीमारियां आदि हो जाती है। प्रदूषण एक प्रकार से वायु द्वारा फैलने वाला रोग है। जिससे अधिक जीवों का नष्ट हो जाता है। प्रत्येक कारण है कि वह बीमारि मनुष्यों के द्वारा ही फैलता है।

(2) प्रदूषण का फैलाव :- प्रदूषण यह एक प्रकार से वायु के द्वारा फैलती है। जिसमें अनेक प्रकार के प्रदूषण है। इसमें बहुत से बिमारियां बीमारियां फैल जाती है। इसी प्रकार अनेक प्रकार के बहुत से प्रदूषण फैलते प्रदूषण अनेक प्रकार से फैलते हो जिससे अनेक प्रकार से प्रदूषण होता है।

40 3 43

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

③ प्रदूषण से बीमारियां फैलना :- प्रदूषण से विभिन्न प्रकार के रोग फैलते है। जिससे बहुत से जीव जन्तुओं में मिलती है। हो जाती है। जैसे बड़े-बड़े फैक्टरियों में दूषित गैस या धुआ निकलती है। और कचड़ा कुड़ा जिसमें विभिन्न प्रकार के प्रदूषण फैलने लगता है। जिससे बहुत से बिमारिया हो जाती है। जैसे टायफाइड, हैजा आदि विभिन्न प्रकार के कि बीमारिया फैलती है।

⑤ उपसंहार :- प्रदूषण से विभिन्न प्रकार के बीमारिया फैलजाती है और विभिन्न प्रकार के बीमारी हो जाती है। इसके अतिरिक्त दूषित जल पिने से, बिना ढको हुआ खाना खाने से, भीड़-भाड़ वाली जगह में जाने से यह बीमारी फैल जाती है। इसके अतिरिक्त विभिन्न का प्रदूषण होते है। जो जल के द्वारा फैलती है। ध्वनि प्रदूषण के ध्वनि द्वारा फैलती है।

B
S
E

43 + 4 = 47

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक – (19) का उत्तर – (अथवा)

① देश-प्रेम की भाव जाग्रत करना।

(ii) राष्ट्रीय भावना में शौर्यभाव का अपना विशिष्ट स्थान है।

(iii) "पुरानी"।

प्र० क्रमांक – (15) का उत्तर =)

निपात शब्द :– किसी बात पर बल देने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है। निपात शब्द कहलाता है।

① भी। – निराशिता

② ही। – बोधिता एवं रूखापन।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

47 — 47

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक-(14) का उत्तर -

महादेवी वर्मा

(i) दो रचनाएँ :- नीहार, दीपशिखा, निरजा।

(ii) (i) भाषा :- महादेवी वर्मा ने बहुत ही अच्छा भाषा का प्रयोग किया है। जिसमें बहुत से शब्दों का प्रयोग किया है। महादेवी वर्मा ने खड़ी बोली का भी प्रयोग किया है। जिसके अन्तर्गत बहुत से सुन्दर रचना की है। अत्यन्त हर्ष के साथ सुन्दर शब्दों का प्रयोग किया है। जिससे महादेवी की रचना अत्यन्त सुलभ होता जारहा है।

(iii) शैली :- महादेवी वर्मा की शैली अतियन्त दिया गया है जिसमें बहुत से अच्छा शैली का प्रयोग किया गया है। जिसमें बहुत से शैली ओ का प्रयोग किया गया है। और बहुत ही अच्छा शैली है। जिसका प्रयोग महादेवी वर्मा ने किया है। जिसमें उत्तप्रिमाड शैली का भी प्रयोग किया गया है।

B S E

योग पूर्व पृष्ठ 47 + 6 = 53 कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

(iii) साहित्य में स्थान:- महादेवी वर्मा का बहुत बड़ा स्थान है। महादेवी वर्मा छायावाद के लेखिका भी है। इसी प्रकार महादेवी का साहित्य में स्थान दिया गया है। इन्होंने चाँद का निशुल्क सम्पादन किया है। इसी प्रकार महादेवी वर्मा की रचना दीपशिखा है। निहार है। येसे बहुत से रचना लिखि गई है। जिसके पश्चात महादेवी वर्मा को साहित्य में स्थान दिया गया है।

3

प्र० क्रमांक -(16) का उत्तर - (अथवा)

मुहावरा	लोकोक्ति
① ऐसा वाक्यांश जो समान अर्थ का बोध ना कराकर किसी विशेष अर्थ का बोध करता है।	① लोक प्रचलित कथन को लोकोक्ति कहते है।
② मुहावरा वाक्य का एक ही अंश होता है	② लोकोक्ति वाक्य का अनेक अंश होते है।
③ उदा:- आँखों का तारा होना।	③ उदा:- धोबी का कुत्ता घर का ना घाट का।

53 53

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक - (17) का उत्तर ⇒

फिराक गोरखपुरी

① दो रचनाएँ :- ① मैला आँचल । ② पलटू बाबू रोड।

③ (i) भावपक्ष -: फिराक गोरखपुरी की भाषा उर्दू, फारसी, तत्सम सा सन शब्दों का प्रयोग अच्छा ढंग से किया है। जिसकी रचना अत्यन्त सुलभ होता है। इसका रचना मैला आँचल अत्यन्त चर्चित काव्य है। जिसका प्रयोग फिराक गोरखपुरी ने है। इसका उपकरण बताइए। कि फिराक गोरखपुरी ने अत्यन्त अच्छा ढंग से किताब किया है। अपनी भाषा का।

(ii) कलापक्ष :- फिराक गोरखपुरी ने अत्यन्त कलात्मक चित्रों का वर्णन किया है। जिसमें अनेक प्रकार के स्वरूप कार मिला है। जिसका सामान प्रकार भली-भाँती प्रयोग किया है। इसका उपकरण किया रहता है कि फिराक ने जिसका अर्थालंकार का प्रयोग किया है। अपने रचना में अधिक किया है।

B
S
E

53 + 3 = 56

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

(3) साहित्य में स्थान :- फिराक गोरख को अत्यन्त प्रतिष्ठ साहित्य में स्थान दिया गया है। इसके माध्य अत्यन्त कार्य भी इन्होंने की है सिसका प्रयोग अपेन रचना में किया है। इसका साहित्य में स्थान मिला है कि 'रुबाइया' रचना बहुत अच्छा की है। जिसका प्रयोग फिराक गोरखपुरी ने कि है।

प्र० क्रमांक - (7) का उत्तर =>

मुअनजों - दड़ो की नगर नियोजन की निम्न विशेषताएं है। -

① मुअनजों - दड़ो की घर सड़क के तरफ घर पृष्ठ भाग होता है।

② मुअनजों - दड़ो के घर में एक मुख्य द्वारा बन रहती थी

③ खिड़किया सामह द्वसर मंजिल पर होगी।

(18)

56 — 56

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 18 के अंक | कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक -(20) का उत्तर =>

गद्यांश :- यह शिरीष एक - - - - - - - - - - - - - - - - मस्त रहते है |

① शब्दार्थ :- आसमान = बादल | मस्त = अन्धा | मौज = प्रस० |

② सन्दर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'आरोह' के पाठ्य 'शिरीष के फूल' से लिया गया है। इसके रचयिता या लेखक 'हजारी प्रसाद द्विवेदी जी है |

③ सन्दर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश में हजारी प्रसाद द्विवेदी ने शिरीष को अवधूत - अदभूत माना है। इसी को यहा प्रस्तुत किया है।

④ व्याख्या :- यह शिरीष एक अदभूत है। इसका उल्लेख किया गया है। इसके दुखः हो या सुख से प्रचलित लेखक है। हजारी प्रसाद द्विवेदी। ने मौजो मे आओ याम मस्त रहते है। इसका अदगम विलमत होता है। कि जिसका धरती आसमान मे दिया गया है। इसका जलते रहो चलते रहो मे इसका निम्न प्रकार से शिरिष के फूल से दिया गया है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्रं.

⑤ विशेष :- ① इस गद्य में विशेष प्रकार के रसों का प्रयोग किया गया है।
② इसमें अनुप्रयास अलंकार का प्रयोग किया गया है।
③ इसमें बहुत से भाषाओं का प्रयोग किया गया है।
④ इसके रचना बहुत ही अच्छे रहेत है।

B
S
E

प्र० क्रमांक — (21) का उत्तर ⇒

पद्यांश :- प्रात नभ था - धुल गई हो।

शब्दार्थ :- भोर = सुबह का समय। नभ = आकाश। बहुत = ढेर - सारा। प्रातः = सुबह। चौका = रसोईया।

प्रसंग सन्दर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'आरोह' भाग्य खण्ड - 1 से लिया गया है। इसके कवि - तुलसीदास जी है। ⇒ कविता ~~~

प्रसंग ⇒ प्रस्तुत पंद्यांश में तुलसीदास जी ने नभ में नीला शंख अर्थात भोर का समय जिसे नीला शंख से अवतरित करते है।

योग पूर्व पृष्ठ 60 + पृष्ठ 20 के अंक 4 = कुल अंक 64

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

इसका अधिक उपकरण है। जिसका मूल्य कारण है कि इसको प्रस्तुत किया गया है।

(1) व्याख्या :- प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे भोर का समय से प्रस्तुत किया है। जिसका भोर के समय को नीला शंख से प्रस्तु किया है। दिया गया है। जिका दिया है। जिसका बहुत काली सिरजल प्राप्त किया गया है। इसका उपकारण दिया गया है। सिलरण से लाल केसर से कि जैसे धूल गई हो

(ख) काव्य सौन्दर्य => (1) इसमें प्रचलित भाषा का प्रयोग किया गया है। इसका रूपान्तर दिया है
(2) अनुप्रयास अलंकार का निशुल्क प्रयोग किया गया है)
(3) विभव रसको प्रयोग किया गया है।

21

योग पूर्व पृष्ठ	पृष्ठ 21 के अंक	कुल अंक
64	3	67

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDAR

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक -(७) का उत्तर -

बच्चे ~~किसके~~ बच्चे अपनी माँ की 'प्रत्याशा' में नीड़ों से झांक रहे थे। उनकी माँ उनके पेट भरने के लिए भोजन लेने के लिए गये हुये थे। इसलिए बच्चे उसकी अपनी माँ की 'प्रत्याशा' में झाँक रहे थी।

प्र० क्रमांक (8) का उत्तर ⇒

समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय शैली है। उल्टापिरामिड शैली। जिसका प्रयोग समाचार लेखन में अधिक लोकप्रिय है।

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक - (10) का उत्तर -

प्रयोगवाद की विशेषताएँ :-
① प्रयोगवादी कविता में दीन-हीन श्रमिक तथा पद दलित मानव का सजीव चित्रण हुआ है।
② मजदूरों के शोषण के प्रति विद्रोह के स्वर।

प्रयोगवाद के प्रवर्तक :- ① अज्ञेय
② नागअर्जुन।

प्र० क्रमांक - (13) का उत्तर =>

भक्तिन के आ जाने से महादेवी वर्मा देहाती इसलिए हो गई की भक्तिन महादेवी को अच्छा-अच्छा भोजन खिला कर अपने बोल-चाल आदि सिखा डाली थी और भोजन में-जैसे हलुआ, मड़ुआ की लपसी, काली तिल की लड्डू आदि खिला कर भक्तिन के महादेवी वर्मा को देहाती बना दी।